Free Digital Copy From ServeNow

पश्चाताप, टूटेपन और क्षमा के बारे में वे बुनियादी बातें जिन्हें आपको जानने की आवश्यकता है

लार्स बी. डनबर्ग

ServeNow

Free Digital Copy From ServeNow

पश्चाताप, टूटेपन और क्षमा के बारे में वे बुनियादी बातें जिन्हें आपको जानने की आवश्यकता है

The Basic Things You Need to Know About Repentance, Brokenness and Forgiveness (Hindi)

By: Lars B. Dunberg

Copyright © 2019 by *ServeNow*.
Used by permission.
All rights reserved.

ISBN: 978-1-964796-42-0

All Bible Verses are taken from The Holy Bible, Hindi. Copyright © 2016 by Bible Society of India. All Rights Reserved. Used By Permission.

Published by *ServeNow*,
1817 Austin Bluffs Parkway #110,
Colorado Springs, CO 80918, USA.

Free Digital Copy from ServeNow

परिचय

इस पुस्तिका में, हम मसीही जीवन के तीन महत्वपूर्ण प्रमुख शब्दों पर विचार करने जा रहे हैं: पश्चाताप, टूटापन और क्षमा। ये सभी अलग-अलग हैं, फिर भी एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं।

पश्चाताप

मत्ती अध्याय 4, पद 17 में हम यीशु की सेवकाई की शुरुआत के बारे में पढ़ते हैं। *उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।*

यीशु द्वारा दिए गए पहले निर्देशों का पालन करना इतना महत्वपूर्ण क्यों है? उसने इसे इतना आवश्यक समझा कि इसे अपनी सार्वजनिक सेवकाई में दर्ज की गई पहली पंक्ति के रूप में कहा।

गलील में दिए गए उसके पहले संदेश के प्रति हमारी प्रतिक्रिया उन प्रमुख कारणों में से एक है जिसके कारण यीशु ने क्रूस पर बलिदान दिया। यदि मैं उसके निर्देशों का पालन नहीं कर रहा हूँ, यदि मेरे जीवन में कोई पश्चाताप नहीं है, तो मुझे उसकी आवश्यकता ही क्यों है? यदि मुझे वास्तव में उसकी आवश्यकता नहीं है, तो उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान मेरे लिए पूरी तरह से अर्थहीन बन जाते हैं।

कुछ लोगों के लिए पश्चाताप यीशु द्वारा दिया गया सबसे कठिन आदेश है जिसका हमें पालन करने की आवश्यकता है। शायद उस पर विश्वास करना भी उतना कठिन नहीं है, और उस विश्वास के परिणामस्वरूप बपतिस्मा लेना भी असंभव नहीं है, लेकिन पश्चाताप–इसे कहाँ से शुरू करें?

बहुत लोग सोचते हैं कि “पश्चाताप” का अर्थ है “अपने जीवन को सुधारना” या “धर्म को अपनाना।” लेकिन वास्तव में, पश्चाताप का अर्थ है एक नया दृष्टिकोण अपनाना–**जीवन को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखना।** परमेश्वर हमसे केवल **मुड़ने** के लिए कहता है। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारे लिए कुछ

Free Digital Copy From ServeNow

निश्चित परिणामों की प्रतिज्ञा है। यदि हम ऐसा नहीं करते, तो इसके वैकल्पिक परिणाम भी निश्चित हैं।

जब नया नियम पश्चाताप की बात करता है, तो इसका वास्तविक अर्थ होता है "पछतावा करना, स्वयं को बदलना।" **पश्चाताप** शब्द का शाब्दिक अर्थ है "पुनर्विचार करना, मन का बदलना," और इसे पाप या बुराई से मुड़ने के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है।

बाइबल के कई भाग हमें सिखाते हैं कि पश्चाताप एक नया जीवन जीने के लिए हमारा मार्गदर्शन करता है। यहाँ कुछ प्रत्यक्ष निर्देश दिए गए हैं जो यीशु ने हमें दिए हैं।

सो मन फिराव के योग्य फल लाओ: और अपने अपने मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता अब्राहाम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर इन पत्थरों से अब्राहाम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है (लूका 3:8)।

जब पौलुस इफिसुस में प्राचीनों को अपना विदाई संदेश दे रहा था, तो उसने इस विषय पर विशेष ध्यान देते हुए कहा, *यहूदियों और यूनानियों के साम्हने गवाही देता रहा, कि परमेश्वर की ओर मन फिराना, और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए* (प्रेरितों के काम 20:21)।

पौलुस आगे बताता है कि यीशु के अनुयायी होने का क्या अर्थ है। यह उस समय भी कलीसिया का मिशन था, और आज भी बना हुआ है! *परन्तु पहिले दमिश्क के, फिर यरूशलेम के रहने वालों को, तब यहूदिया के सारे देश में और अन्यजातियों को समझाता रहा, कि मन फिराओ और परमेश्वर की ओर फिर कर मन फिराव के योग्य काम करो* (प्रेरितों के काम 26:20)।

नए नियम में प्रेरितों के काम की पुस्तक और प्रारंभिक कलीसियाओं को लिखे गए पत्रों में पश्चाताप के विषय में और अधिक बताया गया है:

Free Digital Copy From Servelow

यह सुनकर, वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है (प्रेरितों के काम 11:18)।

क्या तू उस की कृपा, और सहनशीलता, और धीरज रूपी धन को तुच्छ जानता है और कया यह नहीं समझता, कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है? (रोमियों 2:4)।

परमेश्वर के निर्देशों का पालन करने का अर्थ

मत्ती 4:17 में यीशु द्वारा दिया गया पश्चाताप का आह्वान पुराने नियम की तरह संपूर्ण राष्ट्रों के लिए नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए है। यह सीधे आप और मुझसे संबंधित है!

यीशु ने उड़ाऊ पुत्र की कहानी सुनाई, जिसने सबसे अच्छी जगह अर्थात अपने घर में सबसे बुरी प्रार्थना की: "मुझे दे दो, मुझे दे दो, मुझे दे दो!" वर्षों तक अपनी मीरास का गलत उपयोग करने के बाद, उसे सूअरों की देखभाल करने का काम करना पड़ा, लेकिन उसे उनके भोजन में से भी खाने को नहीं मिला। वहीं, उस गंदगी और दुख में, उसने सबसे बुरी जगह पर सबसे अच्छी प्रार्थना की: "मैं योग्य नहीं हूँ।" यह सच्चे पश्चाताप की प्रार्थना थी, जिसके परिणामस्वरूप उसके पिता ने उसे फिर से स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार, जब हम पश्चाताप करते हैं, तो हमारा स्वर्गीय पिता हमें प्रेमपूर्वक अपने पास बुलाता और स्वीकार करता है।

विश्वास के साथ-साथ, *पश्चाताप करो और विश्वास करो* का अर्थ है व्यक्तिगत रूप से पाप के लिए दुःख और टूटा हुआ मन। जब इसे अकेले प्रयोग किया जाता है, तो इसमें पाप के लिए पश्चाताप और पापों की क्षमा में विश्वास, दोनों शामिल होते हैं, जैसा कि उड़ाऊ पुत्र और खोए हुए सिक्के के दृष्टांत में दिखाया गया है।

Free Digital Copy From Servelow

मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्नानवे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं (लूका 15:7)।

एक टूटा हुआ शोकित मन पश्चाताप को उत्पन्न करता है और उद्धार की ओर ले जाता है। *परमेश्वर- भक्ति का शोक ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है जिस का परिणाम उद्धार है और फिर उस से पछताना नहीं पड़ता* (2 कुरिन्थियों 7:10)।

सांसारिक दुःख परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने के परिणामस्वरूप आने वाले दंड के भय का परिणाम होता है, और इस प्रकार का दुःख मसीही बनने से पहले लोगों में पाया जाता है। इसके विपरीत, जो दुःख केवल विश्वासियों में पाया जाता है, वह उनके दैनिक पश्चाताप और पवित्रता व शुद्धिकरण की यात्रा का एक हिस्सा होता है। उनका दुःख दंड के भय पर आधारित नहीं होता, बल्कि परमेश्वर के प्रति उनके प्रेम में निहित होता है। परमेश्वर की संतान इस बात से टूटे मन को महसूस करती है कि उन्होंने उसके विरुद्ध कार्य किया और अपने पापों से उसे अप्रसन्न किया। वे इस बात से व्यथित होते हैं कि उनके पापों ने उनके उद्धारकर्ता को ठेस पहुँचाई, जिसने अपने प्राण को उनके लिए बलिदान के रूप में अर्पित किया, जैसा कि 1 तीमुथियुस 2:6 में लिखा है: *जिस ने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया; ताकि उस की गवाही ठीक समयों पर दी जाए।*

बिना पश्चाताप के कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के साथ और परमेश्वर के लिए जीवन नहीं जी सकता। *सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं, कि ईश्वरत्व, सोने या रूपे या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों। इसलिये परमेश्वर आज्ञानता के समयों में अनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है* (प्रेरितों के काम 17:29-30)।

परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी उसके बिना अनंतकाल बिताए। इसी कारण वह हमारे प्रति इतना धैर्य रखता है! *प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं*

Free Digital Copy From Servehow

करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले (2 पतरस 3:9)।

पश्चाताप का अर्थ केवल पापी आचरण, जैसे झूठ बोलना, धोखा देना या चोरी करना छोड़ना नहीं है। यह केवल अपने उन कार्यों पर दुखी होने तक सीमित नहीं है, और न ही यह कुछ ऐसा है जिसे आप स्वयं अपने प्रयासों से सुधार सकते हैं।

इसके बजाय, पश्चाताप मन और इच्छा का एक परिवर्तन है, जो परमेश्वर के भय और उसकी भलाई के कारण उत्पन्न होता है। इसका परिणाम एक बदला हुआ जीवन होता है, जैसा कि यीशु ने उस कहानी में दर्शाया जहाँ एक पिता ने अपने दो पुत्रों से कहा कि वे उसके लिए काम करें। *उस ने उत्तर दिया, मैं नहीं जाऊंगा, परन्तु पीछे पछता कर गया* (मत्ती 21:29)।

वे साधन जिनका उपयोग परमेश्वर पश्चाताप लाने के लिए करता है: परमेश्वर का वचन और उसके आत्मा की सामर्थ्य

इफ़िसियों 5:10 हमें प्रोत्साहित करता है कि *यह परखो, कि प्रभु को क्या भाता है।* आगे चल कर, पौलुस इफ़िसियों को फिर से लिखता है, *इसलिये ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों की नाईं नहीं पर बुद्धिमानों की नाईं चलो। और अवसर को बहुमोल समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं। इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो, कि प्रभु की इच्छा क्या है?* (इफ़िसियों 5:15-17)।

पश्चाताप का मार्ग खोजने से अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है। मूल रूप से, इतिहास की शुरुआत में मानवजाति के पतन के बाद से यही वह चीज़ है जिसकी हमें सबसे अधिक कमी है।

यह आश्चर्यजनक है कि हम अपनी ज़िंदगी की कठिनाइयों पर इतनी आसानी से रो पड़ते हैं; उन बातों पर जो हमारे साथ हुई हैं, हमारे दुःख, शोक और

Free Digital Copy From Servehow

निराशाओं पर। हम हमेशा यह सोचते हैं कि हम सही हैं, लेकिन इस बात को नजरअंदाज़ कर देते हैं कि हमें अपने स्वयं के जीवन पर रोने की आवश्यकता है।

हमारे स्वभाव में ही आत्म-केंद्रितता और आत्म-धार्मिकता है। हम स्वयं को दोष देने के बजाय दूसरों को दोष देना अधिक पसंद करते हैं। कई बार तो हम परमेश्वर को भी दोष देने लगते हैं, क्योंकि हम उसके मार्गों को समझ नहीं पाते।

सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि हमने पश्चाताप का अनुभव नहीं किया है। दूसरा, हम इसे स्वयं उत्पन्न नहीं कर सकते। तीसरा, हमें पवित्र आत्मा से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमसे बातें करे। वह पिता का आत्मा है, वह यीशु का आत्मा है। उससे डरने की आवश्यकता नहीं है। वह हमारे मन को कोमल और टूटा हुआ बना देगा, जिससे हम अपने पापों के लिए सच्चे पश्चाताप के साथ रो सकें। यही परमेश्वर का अनुग्रह है, जो हमारे जीवन में कार्य करता है।

यीशु ने हमारे लिए क्रूस पर सब कुछ पूरा कर दिया! कुछ समय निकालकर अपने जीवन का पूरी ईमानदारी से मूल्यांकन करें। पवित्र आत्मा को उन बातों के बारे में आपसे बात करने दें, जिन्हें आप सोचते हैं कि केवल आप ही जानते हैं। वह जानता है! फिर कुछ समय निकालकर नए नियम में कलवरी (गोलगोथा) की कहानी पढ़ें और यह महसूस करें कि यीशु ने आपको किन बातों से मुक्त करने के लिए प्राण दिए, वे सभी चीजें जो आपके हृदय के गहरे कोनों में आपको पीड़ा देती हैं। उन्हें अपने अंदर के गहरे कोनों में से निकलकर सतह पर आने दें। फिर उनसे मुड़कर उसकी ओर फिरें, जिसे आपके लिए क्रूस पर चढ़ाया गया। अचानक, आपका दुःख आनंद में बदल जाएगा। सब कुछ पूरा हुआ! उसने आपको स्वतंत्र कर दिया है!

Free Digital Copy From ServeNow

परमेश्वर के निर्देशों का पालन करने के परिणाम

पश्चाताप एक गहरे और निर्णायक परिवर्तन की ओर ले जाता है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग जिन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था, बाद में मसीही बन गए और उसी क्रूसित प्रभु की आराधना और सेवा करने लगे! जब पिन्तेकुस्त के दिन उन्होंने पश्चाताप का संदेश सुना, तो उन्होंने अपने पापों से मुड़कर विश्वास में मसीह को अपनाया और कलीसिया में मिलाए गए।

शाऊल, जिसने मसीहियों को सताया और उनमें से कई की हत्या सुनिश्चित की, यीशु मसीह का सेवक बन गया और पौलुस के नाम से जाना गया। उसे किसने बदला? उसने पश्चाताप किया।

फिलिप्पी का जेलर, जो उस जेल का प्रभारी था जहाँ पौलुस और सीलास कैद में थे, एक अन्यजाति था। आधी रात को आए भूकंप के कारण जेल के दरवाजे खुल गए और कैदी आजाद हो गए और यह देखकर उसके हृदय में परिवर्तन आया। उसने अपने जीवन में पश्चाताप के गहरे प्रभाव का अनुभव किया और यीशु मसीह पर विश्वास किया।

मुझे वह नशे में धुत नाविक याद है, जो उस कलीसिया की सभाओं में आया करता था जहाँ मैं बड़ा हुआ था। वह अक्सर सभाओं में बाधा डालता था। उसके हाथों पर टैटू थे, और उस समय यह आम बात नहीं थी। वह असभ्य था और अक्सर उससे दुर्गंध आती थी। लेकिन एक दिन परमेश्वर के आत्मा ने उसे छू लिया। उसने अपने पुराने जीवन को पूरी तरह अलविदा कह दिया (उसने पश्चाताप किया) और मसीह की ओर मुड़ गया।

पश्चाताप आज भी किसी व्यक्ति के जीवन में गहरे परिवर्तन को लाता है। यदि आप आदतन झूठ बोलते हैं, तो अब आप सत्य बोलना पसंद करेंगे, क्योंकि सत्य के प्रभु ने आपको बदल दिया है। यदि आपको छोटी-छोटी चीजें भी चुराने की आदत थी, तो अब आप वह सब जो आपका नहीं है–सामान, धन, यहाँ तक कि कर विभाग को कर भी–वापस करना चाहेंगे! जक्कई को याद करें, कर वसूलने वाला वह छोटा सा व्यक्ति, जो यीशु को देखने के लिए पेड़

Free Digital Copy From ServeNow

पर चढ़ गया था। जब उसने यीशु से मुलाकात की, तो उसने यह निर्णय लिया कि वह लोगों से अन्यायपूर्वक लिए गए धन का चार गुना वापस करेगा। यही सच्चे पश्चाताप का परिणाम है।

जब पवित्र आत्मा हमें कायल करता है, तो पाप स्पष्ट दिखाई देने लगता है। यदि आपने सच्चे पश्चाताप का अनुभव किया है, तो आप अब यह नहीं कहेंगे, "अगर मैंने पाप किया है" या "मुझे खेद है कि मैंने पाप किया, लेकिन वह मज़ेदार तो था!" पश्चाताप हमारे अस्तित्व के हर पहलू को प्रभावित करता है और हमें वास्तव में ऐसे व्यक्ति के रूप में बदल सकता है, जो परमेश्वर के वचन को स्वीकार करता है, उससे प्रेम करता है और किसी भी कीमत पर उसका आज्ञापालन करता है।

पश्चाताप में मन या इच्छा का परिवर्तन शामिल है। परमेश्वर हमारी सोच को प्रभावित और नियंत्रित करने लगता है। *सो हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं* (2 कुरिन्थियों 10:5)।

यीशु की पहली शिक्षाओं का पालन करना और प्रतिदिन अपने मन, दिशा और हृदय में परिवर्तन का अनुभव करना कितना आनंदमय है!

पश्चाताप के परिणाम
हमारे अंदर नई भूख पैदा हो जाती है

नये जन्मे हुए बच्चों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ (1 पतरस 2:2)।

तेरे उपदेशों के कारण मैं समझदार हो जाता हूं, इसलिये मैं सब मिथ्या मार्गों से बैर रखता हूं॥ तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है (भजन संहिता 119:104-105)।

Free Digital Copy From ServeNow

क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिस ने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है। जिन के द्वारा उस ने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं: ताकि इन के द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूट कर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ (2 पतरस 1:3-4)।

हम एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया में शामिल होते हैं

जब हमने पहली बार मसीह को पाया, तो हमें उसके बारे में बात करना, गाना और उसकी स्तुति करना बहुत अच्छा लगता था। लेकिन समय के साथ इस संसार की चिंताओं ने हमें घेर लिया। व्यस्तता की आत्मा ने धीरे-धीरे उस आनंद को दबा दिया जो हमें यह कहने में मिलता था, "तेरे समान कौन है, हे परमेश्वर, जो हमारे पापों को क्षमा करता है।"

हमने अपने आपको वैसा ही स्वीकार करना शुरू कर दिया जैसा हम थे, अर्थात पापों और कमजोरियों से बंधे हुए। हमने दैनिक पश्चाताप और उद्धारकर्ता के शुद्धिकरण के कार्य के बारे में कुछ नहीं जाना। और बिना महसूस किए, हम धीरे-धीरे उस मार्ग पर बढ़ते गए, जो हमें मसीह से दूर ले जा रहा था।

हमारा यीशु के प्रति प्रेम धीरे-धीरे नीरस होता चला गया। जो सच्चे दुःख और पश्चाताप के साथ क्षमा प्राप्त करते हैं, केवल उन्हीं के अंदर यीशु के प्रेम की आग जलती रहती है। एक ऐसा जीवन जिसमें दैनिक पश्चाताप न हो, आत्मिक रूप से निर्धन होता है। उसमें न तो आनंद होता है, न सामर्थ्य, और न ही आत्मिक फल। ऐसे जीवन में स्वर्ग "निकट" नहीं होता।

पवित्र आत्मा, तेरे बिना मैं कुछ भी नहीं हूँ

सालों से, मैंने देखा है कि अपने हृदय को कठोर और संवेदनहीन बनने देना कितना आसान है। इससे एक अस्पष्ट पीड़ा उत्पन्न होती है, जिसे पहचानना भी कठिन होता है। कठोर हृदय आत्मिक मृत्यु की ओर ले जाता है! मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मेरे एक मार्गदर्शक ने एक बार मुझसे कहा: "लार्स,

Free Digital Copy From Servelnow

दिन की शुरुआत इस प्रार्थना से करो: 'पवित्र आत्मा, मैं अपने जीवन में यीशु की सामर्थ्य के बिना कुछ भी नहीं हूँ। मेरे हृदय की गहराइयों में देख और मुझे वह दिखा जो तुझे दुखी कर रहा है। मैं उससे पश्चाताप करता हूँ, प्रभु, और आपकी सामर्थ्य से उसे ठीक करने के लिए जो भी आवश्यक होगा, वह करूंगा।'" यह पहला कदम है उस टूटे और पश्चातापी मन की ओर, जिसका वर्णन भजन संहिता में किया गया है। यह केवल मेरी ही नहीं, बल्कि हम सबकी दैनिक प्रार्थना होनी चाहिए।

पश्चाताप ही वह एकमात्र द्वार है जिससे सुसमाचार को ग्रहण किया जाता है। हाँ, उद्धार केवल अनुग्रह से ही संभव है, लेकिन पश्चाताप वह शर्त है जो परमेश्वर ने उसकी क्षमा को प्राप्त करने के लिए रखी है। यही वह द्वार है जो मसीह में एक समृद्ध जीवन की ओर ले जाता है। जब आप उसकी क्षमा को प्राप्त करते हैं, तो आप उद्धार के सच्चे आनंद का अनुभव करते हैं, और तब आपका जीवन फिर कभी उन लोगों के समान नहीं दिखेगा जो मसीह में नहीं हैं।

टूटापन

टूटेपन से एक परिचय

परमेश्वर अपनी उपस्थिति और महिमा अपने लोगों पर प्रकट करना चाहता है। वह हमारे हृदयों को अपने प्रेम और आत्मा से भरना चाहता है। वह हमारे सूखे और प्यासे जीवन में अपने अनुग्रह की वर्षा करना चाहता है। वह हमारे हृदयों में जलने वाली पहले प्रेम की आग को फिर से प्रज्वलित करना, टूटे हुए संबंधों को बहाल करना, और हमारे जीवन के उन सभी क्षेत्रों को स्वतंत्र करना चाहता है जिनमें सुधार की आवश्यकता है। यह सब टूटेपन और नम्रता से ही शुरू होता है।

टूटेपन के द्वारा हम एक पवित्र परमेश्वर के निकट आ सकते हैं। यही परमेश्वर की वह उपचार विधि है, जो लगभग हर उस स्थिति के लिए समाधान है, जिसने मानव हृदयों और संबंधों को बीमार कर दिया है। हममें से अधिकांश लोग अकेलेपन, भय, टूटे हुए संबंधों, खुलकर बात करने में कठिनाई, पीढ़ियों

Free Digital Copy From Servelnow

के बीच मतभेद, पारिवारिक संघर्षों, अनसुलझे झगड़ों, अपराधबोध, शर्मिंदगी, लत, पाखंड, और अंदरूनी संघर्षों से जूझते हैं। इन सभी समस्याओं की जड़ अभिमान है। लेकिन सच्चे टूटेपन और नम्रता के द्वारा ये सभी चीजें ढेर हो सकती हैं।

क्या आपको अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह की एक नई तरोताज़गी की आवश्यकता है? क्या आप परिपूर्ण जीवन का अनुभव करने, अलौकिकता के क्षेत्र में जीने, और अपने जीवन में परमेश्वर के आत्मा के निर्विघ्न प्रवाह का आनंद लेने की इच्छा रखते हैं? क्या आप उन स्वार्थी आदतों से मुक्त होना चाहते हैं, जो आपकी आत्मिक यात्रा को प्रभावित करती हैं और आपके संबंधों में विष घोलती हैं?

पुराने नियम के भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने समझ लिया था कि परमेश्वर के लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज़ हृदय है। यदि हृदय बीमार है, तो पूरा शरीर संकट में पड़ जाता है।

परमेश्वर के वचन में हृदय से सम्बन्धित 70 से अधिक हवाले मिलते हैं। *पर इस प्रजा का हठीला और बलवा करने वाला मन है; इन्होंने बलवा किया और दूर हो गए हैं* (यिर्मयाह 5:23)। *हे यरूशलेम, अपना हृदय बुराई से धो, कि, तुम्हारा उद्धार हो जाए। तुम कब तक व्यर्थ कल्पनाएं करते रहोगे?* (यिर्मयाह 4:14)। यीशु ने भी इसी प्रकार से बोला। *हे कपटियों, यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी ठीक की। कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उन का मन मुझ से दूर रहता है। और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं* (मत्ती 15:7-9)।

सुसमाचार का अच्छा समाचार यह है कि यीशु ने हमारे धोखा खाए और बीमार हृदयों के लिए उपचार उपलब्ध कराया है। अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा, उसने वह पूरा किया जो भविष्यवक्ता यहेजकेल ने लिखा था। *मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूंगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे; और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूंगा। मैं तुम को नया मन दूंगा, और तुम्हारे*

Free Digital Copy From Servelow

भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा; और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकाल कर तुम को मांस का हृदय दूंगा। और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूंगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मान कर उनके अनुसार करोगे (यहेजकेल 36:25-27)।

मेरी प्रारंभिक सेवकाई के दौरान, लंदन में मेरे चर्च कार्यालय के बगल में रॉय हेसेन का कार्यालय था। वह एक प्रसिद्ध सम्मेलन प्रचारक और सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तक “Calvary Road” के लेखक थे। इस पुस्तक में उन्होंने लिखा: “टूटना ही बेदारी की शुरुआत है। यह दर्दनाक है, यह अपमानजनक है, लेकिन यही एकमात्र मार्ग है।”

ऐसा लगता है कि परमेश्वर हमसे दूर भी है और हमारे बहुत निकट भी। *क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्थिर रहता, और जिसका नाम पवित्र है, वह यों कहता है, मैं ऊंचे पर और पवित्र स्थान में निवास करता हूं, और उसके संग भी रहता हूं, जो खेदित और नम्र हैं, कि, नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित करूं* (यशायाह 57:15)। जिस व्यक्ति को परमेश्वर की आँखों का तारा कहा गया, अर्थात राजा दाऊद, उसने ये शब्द तब लिखे जब वह परमेश्वर के सामने टूटा हुआ था: *हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर। मुझे अपने साम्हने से निकाल न दे, और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से अलग न कर* (भजन संहिता 51:10-11)।

जब तक आप टूटेपन का अनुभव नहीं करेंगे, तब तक आप परमेश्वर की बेदारी का अनुभव नहीं कर सकते। यूरोप में एक प्रसिद्ध बेदारी के दौर, वेल्श रिवाइवल के दौरान, एक अगुवे ने किसी को यह प्रार्थना करते हुए सुना, “हे प्रभु, हमें झुका दे,” और यह सुनकर वह स्वयं पुकार उठा, “हे प्रभु, मुझे झुका दे!”

परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा: हे पापियों, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगों अपने हृदय को पवित्र करो। दुखी होओ,

Free Digital Copy From Servelnow

और शोक करो, और रोओ: तुम्हारी हंसी शोक में और तुम्हारा आनन्द उदासी में बदल जाए। प्रभु के साम्हने दीन बनो, तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा (याकूब 4:8-10)।

टूटेपन के लिए आवश्यक बातें

टूटापन केवल एक अहसास या भावना नहीं है। इसके लिए हमारी इच्छा के एक निर्णय और कार्य की आवश्यकता है। यह केवल एक बार का अनुभव नहीं, बल्कि हमारे जीवन में एक स्थायी परिवर्तन है।
टूटापन हमारी आत्म-इच्छा का चकनाचूर हो जाना है। यह वह स्थिति है जब हम, जहाँ आमतौर पर "नहीं, प्रभु!" कहते हैं, वहाँ "हाँ, प्रभु!" कहने लगते हैं।

पुराने नियम में *पिसे हुए* शब्द का प्रयोग किया गया है, जो एक कठोर चट्टान के महीन बुरादे में बदल जाने का संकेत है। परमेश्वर क्या तोड़ना चाहता है? हमारी आत्म-इच्छा।

टूटापन हमें परमेश्वर से स्वतंत्र रहने की मानसिकता से मुक्त करता है। यह हमारे कठोर हृदय की भूमि को कोमल बनाता है, ताकि परमेश्वर का बीज उसमें गिरकर फल ला सके। यह एक दोहरी संबंध प्रक्रिया है—पहले परमेश्वर के साथ, और फिर हमारे संगी विश्वासियों के साथ। *पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है* (1 यूहन्ना 1:7)। हमारा जीवन परमेश्वर के लिए खुला है, लेकिन साथ ही उन लोगों के लिए भी, जिनके साथ हम चलते हैं। इसलिए, ज्योति में चलो।

पुराने नियम में दो राजाओं की कहानी मिलती है—शाऊल और दाऊद। दोनों ही पापी थे, दोनों ने गंभीर गलतियाँ कीं। लेकिन शाऊल अभिमानी था और परमेश्वर की आवाज़ के प्रति संवेदनशील नहीं था, जबकि दाऊद अपने पापों के कारण टूट गया और परमेश्वर से क्षमा और शुद्धता के लिए प्रार्थना की।

Free Digital Copy From Servelow

नए नियम में, हम दो व्यक्तियों के बारे में पढ़ते हैं, जो मंदिर में प्रार्थना करने गए थे। *दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये गए; एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेने वाला। फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, कि हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं और मनुष्यों की नाईं अन्धेर करने वाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेने वाले के समान हूं। मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं; मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश भी देता हूं।*

परन्तु चुंगी लेने वाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आंखें उठाना भी न चाहा, वरन अपनी छाती पीट-पीटकर कहा; हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर। मैं तुम से कहता हूं, कि वह दूसरा नहीं; परन्तु यही मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया; क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा (लूका 18:10-14)।

बाइबल इस कथन पर ज़ोर देती है: *ठट्ठा करने वालों से वह निश्चय ठट्ठा करता है और दीनों पर अनुग्रह करता है* (नीतिवचन 3:34)। *यद्यपि यहोवा महान है, तौभी वह नम्र मनुष्य की ओर दृष्टि करता है; परन्तु अहंकारी को दूर ही से पहिचानता है* (भजन संहिता 138:6)।

अपने जीवन को प्राप्त करने का एकमात्र तरीका इसे त्यागना है

सच्ची आराधना टूटेपन और नम्रता से प्रारंभ होती है। अपने पापों पर शोक करना हमें पश्चाताप की ओर ले जाता है, पश्चाताप हमें क्षमा तक पहुँचाता है, क्षमा हमें परमेश्वर से प्रेम करने और उसकी आराधना करने की स्वतंत्रता देती है। और फिर, जब हमें एहसास होता है कि परमेश्वर कौन है, उसने हमारे लिए क्या किया है, और वह हमें कैसे जीने के लिए बुलाता है, तो यह हमें और अधिक टूटेपन की ओर ले जाता है।

Free Digital Copy From ServeNow

परमेश्वर घटनाओं का और टूटे हुए लोगों का इस्तेमाल करता है

पुराने नियम में, हम पढ़ते हैं कि भविष्यवक्ता यिर्मयाह को परमेश्वर ने कुम्हार के घर जाने के लिए कहा। *और वहां मैं तुझे अपने वचन सुनवाऊंगा। सो मैं कुम्हार के घर गया और क्या देखा कि वह चाक पर कुछ बना रहा है! और जो मिट्टी का बासन वह बना रहा था वह बिगड़ गया, तब उसने उसी का दूसरा बासन अपनी समझ के अनुसार बना दिया* (यिर्मयाह 18:2-4)।

नए नियम में, हम पढ़ते हैं कि एक स्त्री कीमती इत्र से भरा हुआ एक संगमरमर का एक पात्र लेकर यीशु का अभिषेक करने के लिए आई। यीशु को अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए, उसे पहले उस पात्र को तोड़ कर इत्र को उंडेलना पड़ा।

जिस रात यीशु पकड़वाया गया, उसने अपने शिष्यों के साथ ईस्टर का भोज मनाया। भोजन के दौरान उसने रोटी ली, उसे तोड़ा, और कहा: *यह मेरा शरीर है, जो तुम्हारे लिए तोड़ा जा रहा है।*

थोड़ी ही देर बाद, यीशु को क्रूस पर कीलों से जड़ दिया गया। उसका शरीर हमारे पापों की क्षमा के लिए तोड़ा गया और उसका लहू बहाया गया।

टूटेपन के लिए परमेश्वर की पहल और हमारे प्रतिउत्तर की आवश्यकता है

परमेश्वर हमसे अपने वचन और आत्मा के द्वारा बात करता है। जब पवित्र आत्मा उसके वचन को ज्योतिर्मय बनाता है, तो यह अपनी सामर्थ्य से हमें तोड़ता है। *यहोवा की यह भी वाणी है कि क्या मेरा वचन आग सा नहीं है? फिर क्या वह ऐसा हथौड़ा नहीं जो पत्थर को फोड़ डाले?* (यिर्मयाह 23:29) परमेश्वर हमारे जीवन में टूटापन लाने के लिए हमारी परिस्थितियों और मसीह की देह के लोगों का उपयोग करता हैं। आज, परमेश्वर के आपको तोड़ने की प्रतीक्षा न करें; बल्कि तोड़े जाने के लिए प्रार्थना करें।

इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए (1 पतरस 5:6)।

Free Digital Copy From ServeNow

क्षमा

बाइबल क्षमा के विषय में क्या सिखाती है

परमेश्वर अनुग्रहकारी और दयालु है। वह उनके पापों को क्षमा करता है जो शुद्ध हृदय पाने के लिए मन फिराकर उसके पास आते हैं। एक नई शुरुआत का अवसर हमेशा रहता है।

जब मैं ने अपना पाप तुझ पर प्रगट किया और अपना अधर्म न छिपाया, और कहा, मैं यहोवा के साम्हने अपने अपराधों को मान लूंगा; तब तू ने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया (भजन संहिता 32:5)।

हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, अपने नाम की महिमा के निमित हमारी सहायता कर; और अपने नाम के निमित हम को छुड़ा कर हमारे पापों को ढांप दे (भजन संहिता 79:9)।

परन्तु तू क्षमा करने वाला है? जिस से तेरा भय माना जाए (भजन संहिता 130:4)।

और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर। और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं।" आमीन। इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा (मत्ती 6:12-15)।

क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है (मत्ती 26:28)।

दोष मत लगाओ; तो तुम पर भी दोष नहीं लगाया जाएगा: दोषी न ठहराओ, तो तुम भी दोषी नहीं ठहराए जाओगे: क्षमा करो, तो तुम्हारी भी क्षमा की जाएगी (लूका 6:37)।

सचेत रहो; यदि तेरा भाई अपराध करे तो उसे समझा, और यदि पछताए तो उसे क्षमा कर (लूका 17:3)।

Free Digital Copy From Servelow

तब यीशु ने कहा; हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहें हैं और उन्होंने चिट्ठियां डालकर उसके कपड़े बांट लिए (लूका 23:34)। *हे बालकों, मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूं, कि उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा हुए* (1 यूहन्ना 2:12)।

पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे (प्रेरितों के काम 2:38)।

उस की सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हें, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उस को उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)। *हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है* (इफ़िसियों 1:7)।

और यदि किसी को किसी पर दोष देने को कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो (कुलुस्सियों 3:13)।

क्योंकि मैं उन के अधर्म के विषय मे दयावन्त हूंगा, और उन के पापों को फिर स्मरण न करूंगा (इब्रानियों 8:12)।

यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है (1 यूहन्ना 1:9)।

क्षमा कठिन लग सकती है

मसीही विश्वासियों के मन में क्षमा के बारे में प्रश्न उठना असामान्य नहीं है। यहाँ तक कि शिष्यों ने भी यीशु से पूछा, *हमें किसी को जिसने हमारे विरुद्ध पाप किया है, कितनी बार क्षमा करना चाहिए?*

क्षमा करना अधिकांश लोगों के लिए आसान नहीं होता। हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति यह होती है कि जब हमें चोट पहुँचती है, तो हम आत्म-सुरक्षा के लिए

Free Digital Copy From Servelow

पीछे हट जाते हैं। जब हमारे साथ कुछ गलत किया जाता है, तो हम स्वाभाविक रूप से क्षमा नहीं कर पाते।
बहुत वर्ष पहले, मुझे नीदरलैंड की एक महिला को जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं उनकी कई पुस्तकों का स्वीडिश प्रकाशक था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, उन्हें जर्मनों द्वारा पकड़ लिया गया और एक यातना शिविर में भेज दिया गया। उनका अपराध यह था कि उन्होंने यहूदी लोगों को अपने घर में छिपाया था ताकि उन्हें जर्मनी के संहार शिविरों में न भेजा जाए। उनका नाम कोरी था।

कोरी की बहन बेट्सी और उनके पिता की मृत्यु यातना शिविर में हुई थी। कोरी को शिविर के पहरेदारों के सामने अन्य महिला कैदियों के साथ नग्न परेड करने के लिए मजबूर किया गया। जब अंततः युद्ध समाप्त हुआ, तो उसे शिविर से रिहा कर दिया गया। उसने मन में ठान लिया कि वह उन सभी को क्षमा कर देगी जिन्होंने उसे और उसके परिवार को पीड़ा पहुँचाई थी। लेकिन वर्षों बाद, एक दिन जब वह जर्मनी के एक चर्च में प्रचार कर रही थी, तो उसके लिए क्षमा करना बेहद कठिन हो गया। उसने यह कहानी इस प्रकार से बताई:

"म्यूनिख में एक कलीसिया सभा के दौरान मैंने उस पूर्व जेल प्रहरी को वहाँ देखा, जो रावेंसब्रुक बंदी शिविर के कार्यवाही केंद्र में स्नानघर के द्वार पर पहरा देता था। वह हमारे असली जेलरों में से पहला था जिसे मैंने उस समय के बाद देखा था।"

"मैं क्षमा के बारे में प्रचार करने के लिए जर्मनी गई थी। यह वह सत्य था जिसे उस कटु, बमबारी से तबाह हुए देश में लोगों को सबसे अधिक सुनने की आवश्यकता थी, और मैंने उन्हें वहाँ अपनी पसंदीदा मानसिक तस्वीर दी। शायद इसलिए कि समुद्र मेरे जैसे किसी व्यक्ति के मन से कभी दूर नहीं होता जिसने अपना बचपन समुद्र के किनारे बिताया हो, मैं यह सोचा करती थी कि क्षमा किए गए पाप वहीं फेंक दिए जाते हैं। 'जब हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं,' मैंने कहा, 'तो परमेश्वर उन्हें सबसे गहरे सागर में डाल देता है और हमेशा के लिए मिटा देता है।'"

Free Digital Copy From Servelnow

"और फिर मैंने उसे देखा, वह इमारत से बाहर जा रहे लोगों के बीच से होकर आगे बढ़ रहा था, क्योंकि सभा समाप्त हो चुकी थी। एक क्षण के लिए मैंने लंबा कोट और भूरे रंग की टोपी देखी; अगले ही क्षण, मुझे वह नीली वर्दी और खोपड़ी और हड्डियों के चिन्ह वाली टोपी दिखाई दी। सब कुछ मानो एक झटके में वापस आ गया: वह विशाल कमरा जिसकी छत से कर्कश रोशनी वाले बल्ब लटक रहे थे; फर्श के केंद्र में पड़ा कपड़ों और जूतों का गंदा ढेर; इस आदमी के सामने नग्न चलने का अपमान। मैं अपनी बहन के दुर्बल शरीर को अपने आगे देख सकती थी, जिसकी पतली पसलियां पारदर्शी त्वचा के नीचे उभरी हुई थीं।"

अब वह मेरे सामने खड़ा था, अपना हाथ आगे बढ़ाए हुए: 'शानदार संदेश! यह जानना कितना अच्छा है कि, जैसा कि आपने कहा, हमारे सब पाप समुद्र की गहराइयों में डाल दिए गए हैं!'

और मैं, जिसने क्षमा के बारे में इतनी सहजता से बात की थी, अपने थैले में कुछ टटोलने लगी ताकि उससे हाथ न मिलाऊँ। उसे निश्चित रूप से मैं याद नहीं थी–आखिर हजारों महिलाओं में से वह एक कैदी को कैसे याद रख सकता था?"

"लेकिन मुझे वह याद था और उसकी बेल्ट से लटकती चमड़े की चाबुक भी। मैं अपने यातना देने वालों में से एक के आमने-सामने थी, और मेरा खून जैसे जम गया।

'आपने अपने प्रचार में रेवेंसब्रुक का जिक्र किया,' उसने कहा, 'मैं वहाँ के जेल शिविर का गार्ड था।' नहीं, मैं उसे याद नहीं थी।

'लेकिन उस समय के बाद,' वह आगे बोला, 'मैं एक मसीही बन गया। मुझे पता है कि परमेश्वर ने मुझे वहाँ किए मेरे क्रूर कृत्यों के लिए क्षमा कर दिया है, लेकिन मैं इसे आपके मुख से भी सुनना चाहूँगा।' फिर से, उसने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा, 'क्या आप मुझे क्षमा करेंगी?'"

Free Digital Copy From Servelow

"और मैं वहाँ खड़ी रही–मैं, जिसके पापों को बार-बार क्षमा किया गया था– क्षमा नहीं कर पाई। उस स्थान पर बेट्सी मरी थी–क्या वह केवल क्षमा माँगकर उसकी धीमी और भयानक मृत्यु को मिटा सकता था?"
यह कुछ ही सेकंड का समय रहा होगा जब वह वहाँ खड़ा रहा–हाथ बढ़ाए हुए–लेकिन मेरे लिए यह घंटों जैसा लग रहा था, क्योंकि मैं अपने जीवन के सबसे कठिन कार्य से जूझ रही थी।

मैं जानती थी कि मुझे यह करना ही होगा। परमेश्वर के क्षमा के संदेश की एक पूर्व शर्त यह है कि, हम उन लोगों को क्षमा करें जिन्होंने हमें चोट पहुँचाई है। *पर यदि तुम दूसरों के अपराध क्षमा नहीं करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा नहीं करेगा।*

मैं इसे केवल परमेश्वर की आज्ञा के रूप में ही नहीं, बल्कि एक दैनिक अनुभव के रूप में भी जानती थी। युद्ध समाप्त होने के बाद से, मैंने नाज़ी क्रूरता के शिकार लोगों के लिए हॉलैंड में एक आश्रय खोला था। जो लोग अपने पूर्व शत्रुओं को क्षमा करने में सक्षम थे, वे बाहरी दुनिया में लौटने और अपने जीवन को फिर से बनाने में भी सक्षम थे, चाहे उनके शारीरिक घाव कितने भी गहरे क्यों नहीं थे। जो लोग अपनी कड़वाहट को पालते रहे, वे अपंग बने रहे। यह उतना ही सरल और उतना ही भयावह था।

और फिर भी मैं वहाँ खड़ी रही, हृदय में कठोरता के साथ। लेकिन क्षमा एक भावना नहीं है–यह मैं भी जानती थी। क्षमा इच्छा का एक कार्य है, और इच्छा हृदय की भावनाओं पर निर्भर हुए बिना कार्य कर सकती है। '... सहायता कर!' मैंने मन ही मन प्रार्थना की। 'मैं अपना हाथ आगे बढ़ा सकती हूँ। इतना तो मैं कर सकती हूँ। भावनाएँ तू प्रदान कर।'

और इसलिए, एक कठोर और यंत्रवत् तरीके से, मैंने अपना हाथ उसके बढ़े हुए हाथ में रख दिया। और जैसे ही मैंने ऐसा किया, एक अविश्वसनीय घटना घटी। एक प्रवाह मेरे कंधे से उठा, मेरे हाथ में दौड़ गया, और हमारे जुड़े हुए हाथों में समा गया। और फिर, यह चंगाई देने वाली गर्मजोशी मेरे पूरे अस्तित्व में फैलती प्रतीत हुई, और मेरी आँखों में आँसू ले आई।

Free Digital Copy From Servelow

'मैं तुम्हें क्षमा करती हूँ, भाई!' मैंने रोते हुए कहा। 'अपने पूरे हृदय से!' एक लंबे क्षण तक, हम एक-दूसरे के हाथ थामे रहे–एक पूर्व पहरेदार और एक पूर्व कैदी। मैंने पहले कभी परमेश्वर के प्रेम को इतनी गहराई से अनुभव नहीं किया था, जितना कि उस क्षण किया।

क्षमा एक सोचा समझा चुनाव है

क्षमा एक ऐसा चुनाव है जिसे हम अपनी इच्छा के निर्णय के माध्यम से कर सकते हैं, जो परमेश्वर के आज्ञापालन और उसकी क्षमा करने की आज्ञा को मानने से प्रेरित होता है।

कुलुस्सियों 3:13 हमें कहता है कि *यदि किसी को किसी पर दोष देने को कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो।*

हम कैसे जान सकते हैं कि हमने सच में क्षमा कर दिया है

जब आप अपराधी को उसके अपराध से मुक्त करते हैं, तो आप अपने आंतरिक जीवन से एक घातक विष को काटकर निकाल देते हैं। आप एक कैदी को आज़ाद करते हैं, लेकिन तब आपको एहसास होता है कि असली कैदी तो आप स्वयं थे। हम तब जान पाएंगे कि क्षमा पूर्ण हो गई है, जब हम उस स्वतंत्रता का अनुभव करेंगे जो इसके परिणामस्वरूप आती है। जब हम क्षमा नहीं करने का चुनाव करते हैं, तो सबसे अधिक कष्ट हम स्वयं उठाते हैं। लेकिन जब हम क्षमा कर देते हैं, तो प्रभु हमारे हृदय को उस क्रोध, कड़वाहट, द्वेष और पीड़ा से मुक्त कर देता है जिसने हमें पहले कैद कर रखा था। हालाँकि, अधिकतर मामलों में, क्षमा एक धीमी प्रक्रिया होती है।

तब पतरस ने पास आकर, उस से कहा, हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं, क्या सात बार तक? यीशु ने उस से कहा, मैं तुझ से यह नहीं कहता, कि सात बार, वरन सात बार के सत्तर गुने तक (मत्ती 18:21-22)।

यीशु के इस उत्तर से यह स्पष्ट होता है कि हमारे लिए क्षमा करना आसान नहीं है। यह कोई एक बार किया जाने वाला चुनाव नहीं है, जिसके बाद हम

Free Digital Copy From Servelnow

स्वचालित रूप से क्षमा करने की अवस्था में जीने लगते हैं। क्षमा करने की प्रक्रिया जीवनभर चल सकती है, लेकिन यह प्रभु के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब तक मसला हमारे हृदय से पूरी तरह समाप्त न हो जाए, हमें क्षमा करते रहना चाहिए।

अपने क्रोध और न्याय की आवश्यकता का निपटारा करना

हालाँकि पाप और अन्याय के प्रति क्रोध महसूस करना हमारे लिए स्वाभाविक है, लेकिन किसी अन्य व्यक्ति के पाप का न्याय करना हमारा कार्य नहीं है। हम प्रार्थना कर सकते हैं कि परमेश्वर अन्याय का निपटारा करे, उस व्यक्ति के जीवन का न्याय करे, और फिर हमें उस प्रार्थना को उसके चरणों में छोड़ देना चाहिए। हमें अब और उस क्रोध का बोझ उठाने की आवश्यकता नहीं है। *दोष मत लगाओ; तो तुम पर भी दोष नहीं लगाया जाएगा: दोषी न ठहराओ, तो तुम भी दोषी नहीं ठहराए जाओगे: क्षमा करो, तो तुम्हें भी क्षमा किया जाएगा* (लूका 6:37)।

हमें क्षमा क्यों करना चाहिए

क्षमा करने का सबसे अच्छा कारण यह है कि यीशु ने हमें क्षमा करने की आज्ञा दी है। हम वचन में से सीखते हैं कि यदि हम क्षमा नहीं करते, तो हमें भी क्षमा नहीं किया जाएगा।

इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा (मत्ती 6:14-15)।

और जब कभी तुम खड़े हुए प्रार्थना करते हो, तो यदि तुम्हारे मन में किसी की ओर से कुछ विरोध, हो तो क्षमा करो: इसलिये कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे (मरकुस 11:25)।

Free Digital Copy From Servelnow

क्षमा करने का निर्णय हृदय परिवर्तन का कारण बनता है

जब हम क्षमा करने का चुनाव करते हैं, तो परमेश्वर हमारी आज्ञाकारिता और उसे प्रसन्न करने की हमारी इच्छा का सम्मान करता है। वह अपने समय पर इस कार्य को पूरा करता है। हमें विश्वास के साथ क्षमा करते रहना चाहिए (यह हमारा कार्य है), जब तक कि क्षमा का कार्य (जो प्रभु का कार्य है) हमारे हृदय में पूर्ण न हो जाए।

और मुझे इस बात का भरोसा है, कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा (फिलिप्पियों 1:6)।

बाइबल हमें स्वयं को क्षमा करने के विषय में क्या कहती है

बाइबल कभी भी "स्वयं को क्षमा करने" के विचार के बारे में नहीं बात करती। इसके बजाय, यह उन लोगों को क्षमा करने के बारे में बात करती है जो हमारे विरुद्ध पाप करते हैं और क्षमा मांगते हैं। जब हम मसीह के द्वारा हमारे पापों का पहले ही मूल्य चुकाए जाने के आधार पर परमेश्वर से क्षमा मांगते हैं, तो वह हमें क्षमा करता है। *यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है* (1 यूहन्ना 1:9)।

हालाँकि हम पाप के बंधन से मुक्त कर दिए गए हैं, फिर भी कई बार हम उसमें डूबे रहने का चुनाव करते हैं और ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि हम उससे मुक्त नहीं हुए हैं। इसी तरह, अपराधबोध की भावनाओं के साथ भी ऐसा ही है। हम इस सच्चाई को स्वीकार कर सकते हैं कि मसीह में हमें क्षमा मिल चुकी है, लेकिन फिर भी शैतान के इस झूठ पर विश्वास कर लेते हैं कि हम अब भी दोषी हैं और हमें अपराधबोध महसूस करना चाहिए।

बाइबल कहती है कि जब परमेश्वर क्षमा करता है तो वह कहता है, *उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा* (यिर्मयाह 31:34)।

वह हमें क्षमा करता है, इसका अर्थ यह नहीं है कि सर्वज्ञानी परमेश्वर हमारे पापों को भूल जाता है। बल्कि, वह स्वयं उन्हें याद न रखने और हमारे पापों को दूसरों के सामने न लाने का चुनाव करता है। जब हमारे पूर्व पाप हमारे

Free Digital Copy From ServeNow

मन में आते हैं, तो हम या तो उन पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं (जिससे अपराधबोध उत्पन्न होगा), या फिर हम अपने मन को उस अद्भुत परमेश्वर के विचारों से भर सकते हैं जिसने हमें क्षमा किया, और फिर उसके लिए धन्यवाद और स्तुति कर सकते हैं। *जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, निदान, जो जो सदगुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो* (फिलिप्पियों 4:8)।

कुछ लोग "स्वयं को क्षमा नहीं करते," जिसका अर्थ यह है कि वे अपने अतीत से आगे नहीं बढ़ते। वास्तव में, वे अपने पिछले पापों को भूलना नहीं चाहते, बल्कि अपने मन में उन्हें बार-बार जीकर एक तरह की उत्तेजना प्राप्त करते हैं। यह भी एक पाप है और इसे स्वीकार करके त्याग देना चाहिए। जब भी हम अपने पापों को दिमाग में दोहराते हैं, तो हम उसी पाप को फिर से करते हैं। यदि किसी मसीही विश्वासी के जीवन में यह हो रहा है, तो पाप और अपराधबोध का यह चक्र विनाशकारी और अंतहीन हो सकता है।

यह याद रखना कि हमारे पाप क्षमा किए गए हैं, इससे हमारे लिए दूसरों के पाप क्षमा करना आसान होना चाहिए। *यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है, कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया, जिन में सब से बड़ा मैं हूं* (1 तीमुथियुस 1:15)। क्षमा से हमें वह महान उद्धारकर्ता याद आना चाहिए जिसने हमें क्षमा किया और यह हमें प्रेमपूर्ण आज्ञाकारिता में उसके निकट ले जाएगी। *क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे?* (रोमियों 5:10)।

परमेश्वर हमारे पापों को हमारे मन में आने दे सकता है। शैतान भले ही इसका उपयोग बुरे उद्देश्य से करना चाहता हो, लेकिन परमेश्वर एक अच्छे उद्देश्य के लिए इसकी अनुमति देता है, ताकि हम उसकी क्षमा को स्वीकार करें और उसके अनुग्रह में आनंदित हों।

जब आपको किसी को क्षमा करने में कठिनाई हो रही हो, तो कुछ समय निकालकर ध्यान दें कि हो सकता है परमेश्वर उस अपराध का उपयोग भलाई

Free Digital Copy From Servehow

के लिए कर रहा हो। क्या यह परमेश्वर की महिमा करने का एक असामान्य अवसर तो नहीं है? आप दूसरों की सेवा कैसे करते हुए उन्हें उनके विश्वास में बढ़ने में कैसे मदद कर सकते हैं? आपके कौन से पाप और कमजोरियाँ उजागर हो रही हैं? आपको चरित्र के किन गुणों को प्रकट करने की चुनौती मिल रही है? जब आप यह समझ जाते हैं कि जिसने आपको ठेस पहुँचाई है उसे परमेश्वर आपको परिपक्व बनाने, दूसरों की सेवा करने और उसकी महिमा करने में मदद के लिए अपने हाथों के एक साधन रूप में इस्तेमाल कर रहा है, तो आपके लिए क्षमा की ओर बढ़ना आसान हो सकता है।

परमेश्वर का धन्यवाद हो उस कार्य के लिए जो उसने तुम में किय है। पौलुस ने कुरिन्थियों की कलीसिया को लिखा, *तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है: और परमेश्वर सच्चा है: वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको* (1 कुरिन्थियों 10:13)।

पौलुस ने रोमियों को भी लिखा, *और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं* (रोमियों 8:28)।

क्षमा न करना एक ज़हर है

बहुत से लोग दूसरों को क्षमा न करके अपने स्वास्थ्य और जीवन को नष्ट कर लेते हैं। यह कड़वाहट, द्वेष और अक्षम्यता के ज़हर को निगलने के समान है। यीशु हमें इस कहानी के माध्यम से सिखाता है: *इसलिये स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपने दासों से लेखा लेना चाहा। जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उसके साम्हने लाया गया जो दस हजार तोड़े धारता था। जब कि चुकाने को उसके पास कुछ न था, तो उसके स्वामी ने कहा, कि यह और इस की पत्नी और लड़के बाले और जो कुछ इस का है सब बेचा जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए।*

Free Digital Copy From Servelow

इस पर उस दास ने गिरकर उसे प्रणाम किया, और कहा; हे स्वामी, धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूंगा। तब उस दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया, और उसका धार क्षमा किया। परन्तु जब वह दास बाहर निकला, तो उसके संगी दासों में से एक उस को मिला, जो उसके सौ दीनार धारता था; उस ने उसे पकड़कर उसका गला घोंटा, और कहा; जो कुछ तू धारता है भर दे।

इस पर उसका संगी दास गिरकर, उस से बिनती करने लगा; कि धीरज धर मैं सब भर दूंगा। उस ने न माना, परन्तु जाकर उसे बन्दीगृह में डाल दिया; कि जब तक कर्ज को भर न दे, तब तक वहीं रहे।

उसके संगी दास यह जो हुआ था देखकर बहुत उदास हुए, और जाकर अपने स्वामी को पूरा हाल बता दिया। तब उसके स्वामी ने उस को बुलाकर उस से कहा, हे दुष्ट दास, तू ने जो मुझ से बिनती की, तो मैं ने तो तेरा वह पूरा कर्ज क्षमा किया। सो जैसा मैं ने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना नहीं चाहिए था? और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देने वालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्जा भर न दे, तब तक उन के हाथ में रहे। इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा (मत्ती 18:23-35)।

किसी व्यक्ति के प्रति घृणास्पद विचारों को बार-बार अपने मन में दोहराना अपने आपको मानसिक यातना देने के समान है।

क्षमा करने के द्वारा हम किसकी सहायता करते हैं

जब आप उस व्यक्ति को क्षमा करते हैं जिसने आपको चोट पहुँचाई है, तो आप सबसे अधिक किसकी मदद कर रहे हैं? वास्तव में, दूसरे व्यक्ति से भी अधिक आप खुद की मदद कर रहे होते हैं। हमें अक्सर ऐसा लगता है कि जिन लोगों ने हमें आहत किया है, उन्हें क्षमा करना बहुत कठिन है। हमें यह भी लग सकता है कि यह अन्यायपूर्ण है कि वे क्षमा प्राप्त करें, जबकि हम

Free Digital Copy From Servelow

उस दर्द को अपने भीतर ढोते रहें। हमें पीड़ा मिली, और वे बिना कोई कीमत चुकाए स्वतंत्र हो गए। लेकिन सच्चाई यह है कि जब हम क्षमा करने का चुनाव करते हैं, तो हम वास्तव में अपना ही भला कर रहे होते हैं।

हम दूसरे व्यक्ति को स्वतंत्र करने के द्वारा उनकी भी सहायता करते हैं, ताकि परमेश्वर वह कर सके जो केवल वही कर सकता है। यदि हम प्रतिशोध लेने या परिस्थिति को अपने हाथों में लेने की कोशिश करते हैं, बजाय इसके कि हम परमेश्वर पर भरोसा करें और उसकी आज्ञा का पालन करें, तो परमेश्वर उस व्यक्ति से निपटने के लिए बाध्य नहीं होगा। लेकिन यदि हम क्षमा के माध्यम से उन्हें परमेश्वर के हाथों में सौंप देते हैं, तो वह स्वयं न्याय करने का कार्य करता है। क्षमा करना परमेश्वर के वचन के प्रति हमारी आज्ञाकारिता का पहला कदम है। इसके बाद, परमेश्वर अपनी विश्वासयोग्यता में हमें अपने चुने हुए तरीके से आशीष प्रदान करता है।

क्षमा करने से परमेश्वर को हमारे भीतर भी कार्य करने का अवसर मिलता है। जब हम अक्षम्यता के ज़हर से मुक्त हो जाते हैं, तो हम अधिक प्रसन्न रहते हैं और शारीरिक रूप से भी बेहतर महसूस करते हैं।

मरकुस 11:22-26 में यीशु हमें बताता है कि क्षमा न करना हमारे विश्वास को कार्य करने से रोकता है। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, *मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई इस पहाड़ से कहे; कि तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़, और अपने मन में सन्देह न करे, वरन प्रतीति करे, कि जो कहता हूं वह हो जाएगा, तो उसके लिये वही होगा। इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिये हो जाएगा। और जब कभी तुम खड़े हुए प्रार्थना करते हो, तो यदि तुम्हारे मन में किसी की ओर से कुछ विरोध, हो तो क्षमा करो: इसलिये कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे।*

यदि हम दूसरों को क्षमा नहीं करते, तो पिता हमारे पापों को क्षमा नहीं कर सकता। हम वही काटते हैं जो हम बोते हैं। यदि हम दया बोएंगे, तो दया पाएंगे। यदि हम न्याय बोएंगे, तो न्याय पाएंगे।

Free Digital Copy From Servelow

जब हम क्षमा करने के लिए तैयार होते हैं, तो परमेश्वर के साथ हमारी संगति स्वतंत्र रूप से प्रवाहित होती है, लेकिन क्षमा न करना इसे अवरुद्ध कर देता है। इसके अलावा, क्षमा करने से शत्रु को हमारा फायदा उठाने का अवसर नहीं मिलता। पौलुस इफिसियों को लिखता है: *क्रोध तो करो, पर पाप मत करो: सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे। और न शैतान को अवसर दो।* शैतान को आपको यातना देने में मदद न करें। क्षमा करने में तत्पर बनें।

एक व्यक्ति से घृणा करना और दूसरे से प्रेम करना कठिन है। जब हमारा हृदय सही स्थिति में नहीं होता, तो किसी के साथ भी सही व्यवहार करना मुश्किल हो जाता है। यहां तक कि जिन लोगों से हम प्रेम करना चाहते हैं, वे भी हमारी कड़वाहट, द्वेष और क्षमा न करने के कारण पीड़ित हो सकते हैं।

निष्कर्ष

क्षमा के बारे में पढ़ना समाप्त करते हुए, यहाँ कुछ ठोस कदम दिए गए हैं जिन्हें हमें उठाना चाहिए। इसे प्रभावी बनाने के लिए हमें परमेश्वर के वचन का पालन करना आवश्यक है। यह कुछ निर्देश हैं जो बाइबल हमें देती है:

एक सचेत निर्णय लें

यदि हम तब तक प्रतीक्षा करें जब तक कि हमें क्षमा करने की इच्छा न हो, तो हम कभी क्षमा नहीं कर पाएंगे। हमें परमेश्वर की आज्ञा मानने का चुनाव करने और शैतान द्वारा हमारे अंदर कड़वे विचारों का ज़हर भरने के प्रयासों का दृढ़ता से विरोध करने की आवश्यकता है। क्षमा करने का एक ठोस और स्थायी निर्णय लें, और परमेश्वर उचित समय पर आपकी आहत भावनाओं को चंगा करेगा।

और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर। और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं।" आमीन। इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा (मत्ती 6:12-14)।

Free Digital Copy From Servelow

पवित्र आत्मा पर निर्भर रहें

हम पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के बिना क्षमा नहीं कर सकते। इसे अपने बल पर करना बहुत कठिन है। यदि हम वास्तव में इसके इच्छुक हैं तो परमेश्वर हमें सक्षम बनाएगा, लेकिन हमें स्वयं को नम्र बनाना होगा और उसकी सहायता के लिए पुकारना होगा। यह कहकर उस ने उन पर फूंका और उनसे कहा, *पवित्र आत्मा लो* (यूहन्ना 20:22-23)। नीचे दिए गए पदों में उसका निर्देश लोगों को क्षमा करने के बारे में था। *जिन के पाप तुम क्षमा करो वे उन के लिये क्षमा किए गए हैं जिन के तुम रखो, वे रखे गए हैं।*

कृपया प्रार्थना करें कि परमेश्वर आप पर पवित्र आत्मा को फूंके, ताकि आप उन लोगों को क्षमा कर सकें जिन्होंने आपको आहत किया है।

परमेश्वर के वचन का पालन करें

वचन हमें हमारे शत्रुओं को क्षमा करने का निर्देश देता है।
परन्तु मैं तुम सुनने वालों से कहता हूं, कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो; जो तुम से बैर करें, उन का भला करो। जो तुम्हें स्राप दें, उन को आशीष दो: जो तुम्हारा अपमान करें, उन के लिये प्रार्थना करो (लूका 6:27-28)।
अपने सताने वालों को आशीष दो; आशीष दो श्राप न दो (रोमियों 12:14)।
आशीष देने का अर्थ है "किसी के लिए अच्छा बोलना," और *श्राप देने* का अर्थ है "किसी के लिए बुरा बोलना।"

जिस व्यक्ति ने आपको बहुत पहले आहत किया था उसे क्षमा करें, और उस अजनबी को भी क्षमा करें जिसने कल आपके पैर पर कदम रख दिया था। इन दो चरमसीमाओं के साथ-साथ उनके बीच के सभी लोगों को भी क्षमा करें। शीघ्र क्षमा करें। जितनी जल्दी आप क्षमा करेंगे, यह उतना ही आसान होगा। खुले मन से क्षमा करें। मत्ती 10:8 कहता है, *तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो। क्षमा करने* का अर्थ है "किसी दोष को माफ करना, भुगतान से मुक्त करना, क्षमा देना, दूर करना, रद्द करना, और बिना शर्त अनुग्रह प्रदान करना।"

Free Digital Copy From Servelnow

यदि आप परमेश्वर से क्रोधित हैं क्योंकि आपका जीवन वैसा नहीं बन पाया जैसा आपने सोचा था, तो परमेश्वर को क्षमा करें। परमेश्वर कभी गलत नहीं करता। हो सकता है कि कुछ चीजें आपकी समझ से परे हों, लेकिन याद रखें कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है। जब हम उसकी सहायता नहीं लेते जो एकमात्र हमारी सहायता कर सकता है, तो यह एक गंभीर भूल होती है।

उस सारे ज़हर को निकाल फेंकें जो कड़वाहट, द्वेष और क्षमा न करने से उत्पन्न होता है। अपने हृदय को इन नकारात्मक भावनाओं से शुद्ध करें। और नीतिवचन 4:23 को स्मरण रखें: *सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।* इसलिए, क्षमा करने और शुद्ध बने रहने के लिए परमेश्वर के वचन के जल से धुल जाएं।

प्रश्न

- मत्ती रचित सुसमाचार में, यीशु की सेवाकाई के दौरान बोलकर सुनाया गया पहला संदेश क्या था?
- पश्चाताप का वास्तविक अर्थ क्या है?
- यदि हम अपने जीवनों के लिए परमेश्वर के निर्देशों का पालन करते हैं तो इसके क्या परिणाम होते हैं?
- परमेश्वर के सामने टूटे मन के होने का क्या अर्थ है?
- क्या आप किसी को, या स्वयं को भी क्षमा करने में कठिनाई महसूस कर रहे हैं?
- यदि हम क्षमा न करने का निर्णय करते हैं तो क्या होता है?
- हम क्षमा करने का विवेकपूर्ण निर्णय कैसे ले सकते हैं?
- क्षमा का जीवन जीने के लिए हमें किस पर निर्भर होने की और किस बात का पालन करने की आवश्यकता है?